इकाई 3 वास्तु के प्रकार

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 वास्तु के प्रकार

- 3.2.1 वास्तु निर्माण की आयोजना
- 3.2.2 वास्तु निर्माण का आकार
- 3.2.3 भू खण्डों का वर्गीकरण

3.3 आधुनिक वास्तुशास्त्र

- 3.3.1 ईशान एवं पूर्व का भूखण्ड विचार
- 3.3.2 आग्नेय एवं दक्षिण का भूखण्ड विचार
- 3.3.3 नैऋत्य एवं पश्चिम का भू खण्ड विचार
- 3.3.4 वायव्य एवं उत्तर का भूखण्ड विचार

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 उपयोगी पुस्तकें

3.7 बोध प्रश्न

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप:

- वास्तु के प्रकार तथा बरामदे की स्थिति के अनुसार ध्रुवादि 16 वास्तु भेद के बारे में बतायेंगे ।
- शांतन आदि 64 गृह भेदों को पूर्णतया बतायेंगे।
- सूर्यादि 8 गृह भेदों को भी जानेंगे।
- एकशाल – द्विशाल –त्रिशाल एवं चतुरशाल गृहों (घरों) के बारे में बतायेंगे।
- एकशाल आदि वास्तु योग से निर्मित गृहों के शुभाशुभ फल की विस्तृत विवेचना करेंगे।
- वास्तु निर्माण की आयोजना बनाने में स्वयं तथा दूसरों की मदद करेंगे।
- भूखण्डों का वर्गीकरण करते हुए इनके शुभाशुभ फल का निर्देश करेंगे।
- आधुनिक वास्तुशास्त्र के अनुसार दिशाओं तथा भूखण्डों का अवलोकन करके लोगों को अवगत करायेंगे।

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में संचालित वास्तुशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के अन्तर्गत, वास्तुशास्त्र के स्वरूप एवं इतिहास नामक पाठ्यक्रम की खण्ड 1 "वास्तुशास्त्र का स्वरूप" नामक उपशीर्षक के अन्तर्गत यह तीसरी इकाई है। इस इकाई का नाम है "वास्तु के प्रकार" इस विषय के अन्तर्गत पञ्च महाभूत का जहाँ – जहाँ सम्बन्ध है उन सभी वस्तुओं से मनुष्य जुड़ा हुआ है तथा मनुष्य जहाँ – जहाँ निवास करता है उसे वास्तु ही कहते हैं, इसके भेद अलग – अलग हैं – जैसे – भूमि, देवालय, यान, शयन, इन सभी में मुख्य वास्तु भूमि ही है क्योंकि भवन एवं इसके निर्माण की सभी वस्तु भूमि से ही उत्पन्न होते हैं एवं भूमि पर ही निर्माण कार्य सम्पन्न होता है इसलिए विज्ञजन इसे वास्तु की संज्ञा से अनुगृहीत किया है। इसलिए मूलवास्तु पर विचार किया जाय तो गृह – भवन – महल के लिए भूमि परिक्षण अनिवार्य होता है जिसके अन्तर्गत (भूमि का वर्ण, गन्ध, रस, एवं स्पर्श) इत्यादि का विचार करके दिशा इत्यादि का निर्णय करके, भूमि के आकृति (बनावट) इत्यादि शब्द का विचार करके जैसे कभी – कभी आप मन्दिर में बैठते है तो मन कितना आनन्दित हो जाता है, तथा वायु के स्पर्श मात्र से भी सुखानुभूति प्रतीत होती है इन सभी विषयों का विचार करके भवन निर्माण करना चाहिए। चूँकि वास्तु विवेचन का शास्त्र है। "वास्तु" शब्द संस्कृत का शब्द है इसका उल्लेख संस्कृत के हिन्दी कोष (रचयिता – वामन शिवराम आप्टे) में इस प्रकार किया है, पुलिंग – नपुंसक लिंग के वस् धातु में तुण प्रत्यय लगाकर वास्तु शब्द का निर्माण हुआ है। इसका अर्थ है – घर बनाने की जगह, भवन –भूखण्ड –जगह घर – आवास, निवास भूमि। वास्तु शब्द का अर्थ जैन ज्ञानकोष (मराठी) में इस प्रकार किया गया है – वास्तु का अर्थ घर से भी है, तथा ग्राम या नगर से भी है। यहां पर घर को तीन भागों में विभाजित किया गया है, 1 – खान (इसका आशय आप को भूमि के निचे बनाया गया तलघर समझना चाहिए), 2 – उत्छित (भूमि के उपर बनाया हुआ घर), 3 – खातोच्छित (तलघर सहित दुमंजिला घर) अतएव यह स्पष्ट है कि वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित विषयों में गृह निर्माण एवं उसकी भूमि तथा आवास गृहों से सम्बन्धित उक्त शीर्षक "वास्तु के प्रकार को समझना चाहिए। चूँकि भूमि चयन तथा भूमि परीक्षण के बारे में पूर्व के पाठ में बताया जा चुका है इसलिए इस पाठ में आप को वास्तु प्रकार का आशय स्तम्भ – कक्ष – द्वार –आदि में विविधता करके 16384 प्रकार के भवन बनाए जा सकते हैं, इस प्रकार के घर यद्यपि वर्तमान युग में बनाना कम सम्भव है फिर भी आपलोगों के विशेष जानकारी के लिए ध्रुवादि 16 तथा शांतवन आदि 64 गृह भेदों के नाम एवं इन भवनों के बारे में तथा सूर्यादि 8 गृहों के बारे में उल्लिखित किया गया है साथ ही गृह आयोजना, आकार तथा दिशाओं के अनुसार भवन निर्माण के बारे में आपलोग जानकर समाज को अवगत कराते हुए वास्तु के महत्व को बतायेंगे इसी आशय के साथ यह पाठ प्रस्तुत है।

3.2 वास्तु के प्रकार

वास्तुशास्त्र के अनुसार शाला ,अलिन्द, गुंजारी, दीवार, पट्टे, स्तम्भ, झरोखा, एवं मण्डप आदि के भेद से 16384 प्रकार के घर बनते हैं। परन्तु इन सबके नाम वर्तमान में नहीं मिलते हैं, किन्तु ध्रुवादि एवं शांतनादि गृहों के नाम शास्त्रों में उपलब्ध है।

ध्रुवादि सोलह भेदों का वर्णन इस प्रकार है, जिस प्रकार चार गुरु अक्षर वाले छन्द के सोलह भेद होते है उसी प्रकार घर के प्रदक्षिणा क्रम से लघुरूप शाला द्वारा ध्रुव –धान्यादि सोलह घर बनते हैं। (।) के स्थान पर शाला तथा गुरु (ऽ) के स्थान पर दीवार समझना चाहिए। जैसे – प्रथम चारों ही अक्षर गुरु है तो घर के चारों ही दिशा में दीवार है अर्थात् किसी भी दिशा में कोई शाला नहीं है। प्रस्तार के दूसरे भेद में प्रथम लघु है। यहाँ दूसरा धान्य नाम के घर की पूर्व दिशा में शाला समझनी चाहिए। तीसरे भेद में दूसरा लघु है यहां तीसरे जय नाम के घर के दक्षिण में शाला है। चौथे भेद में पूर्व और दक्षिण में एक –एक शाला है। उदाहरण के लिए 16 घरों के नाम सहित चित्र प्रस्तुत है –

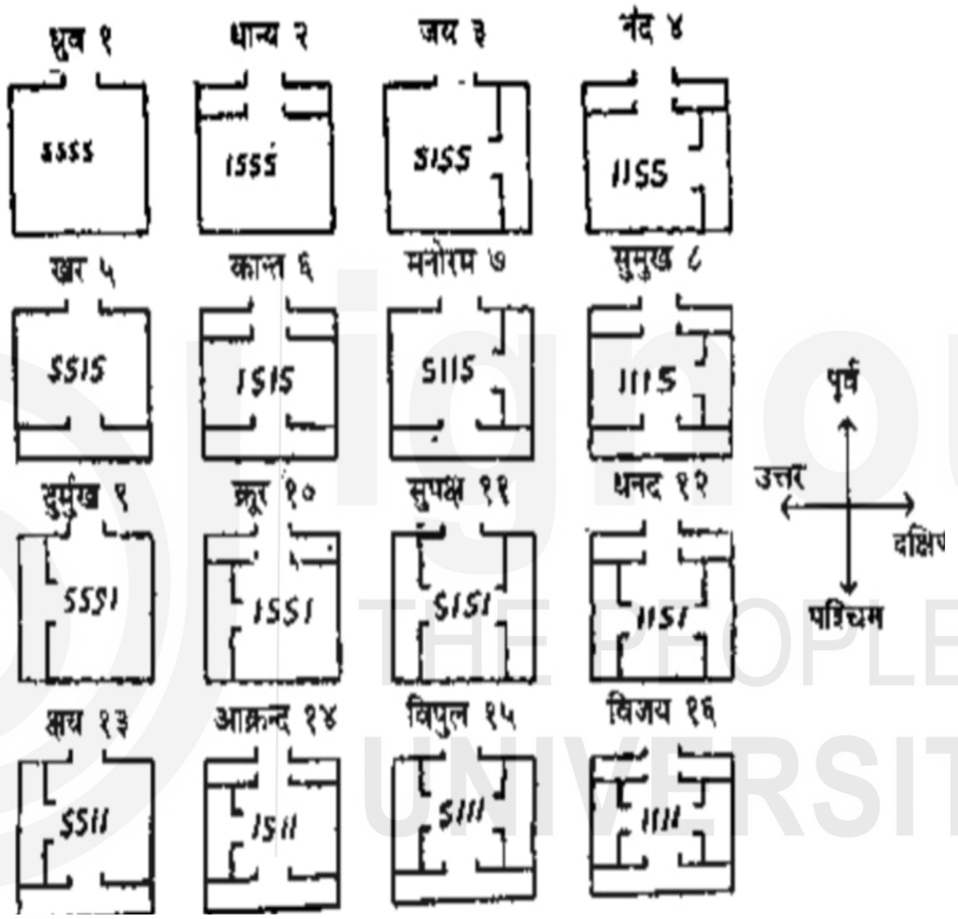

आप के समक्ष 16 गृहों को सचित्र दिशा ज्ञान सहित स्थापित किया गया है, अब इसके फलों के बारे में जानना आवश्यक है। तथा इन गृहों में कमरा किस दिशा में होता है एवं दीवार किस तरफ होगा तथा इन घरों में निवास का फल क्या होगा इन सभी बातों को आप अधोलिखि चक्र के माध्यम से आसानी से जानकारी प्राप्त करेंगे -

क्रम संख्या	नाम	स्थिति	फल
1	ध्रुव	चारों ओर दीवार कमरा नहीं	जय कारक
2	धान्य	तीनों ओर दीवार पूर्व में कमरा	धान्य वृद्धि कारक
3	जय	तीनों ओर दीवार दक्षिण में कमरा	शत्रु जय कारक
4	नन्द	दो ओर दीवार पूर्व और दक्षिण में कमरा	सर्व समवृद्धिकारक
5	खर	तीनों ओर दीवार, पश्चिम में कमरा	क्लेश दायक

6	कान्त	दो ओर दीवार, पूर्व एवं पश्चिम में कमरा	अति लाभदायक, धन ,आयु ,आरोग्य, ऐश्वर्य की वृद्धि
7	मनोरम	दो ओर दीवार, दक्षिण व पश्चिम में कमरा	मन में संतोष, आनन्द
8	सुमुख	एक ओर दीवार पूर्व, पश्चिम ,दक्षिण में कमरा	राजसम्मान की प्राप्ति
9	दुर्मुख	तीन ओर दीवार उत्तर की ओर कमरा	सदा दुखदायक, क्लेश
10	क्रूर	दो ओर दीवार पूर्व व उत्तर की ओर कमरा	भय, व्याधि
11	सुपक्ष	दो ओर दीवार उत्तर व दक्षिण की ओर कमरा	परिवार बृद्धि
12	धनद	एक ओर दीवार पूर्व ,उत्तर, दक्षिण की ओर कमरा	सोना, चांदी, रत्न,वाहन आदि की वृद्धि
13	क्षय	दो ओर दीवार उत्तर, पश्चिम की ओर कमरा	धन, धान्य, सुख की हानि
14	आक्रन्द	एक ओर दीवार, पूर्व ,उत्तर ,पश्चिम की ओर कमरा	परिवार जनों की मृत्यु
15	विपुल	एक ओर दीवार ,उत्तर पश्चिम, दक्षिण की ओर कमरा	आरोग्य कीर्तिदायक
16	विजय	उत्तर, दक्षिण ,पूर्व, पश्चिम, चारों ओर कमरे	सुख सम्पत्ति दायक

चूँकि ध्रुव आदि 16 गृहों के बारे में पूर्णतया आप सब समझ गये अब आइए शांतवन आदि 64 गृहों के नाम को जानते हैं –

1 – शांतवन	17 – बन्दुध	33 – श्रीधर	49 – विलाश
2 – शान्तिद	18 – पुत्रद	34 – सर्वकामद	50 – बहुनिवास
3 – वर्धमान	19 – सर्वांग	35 - पुष्टिद	51 – पुष्टिद
4 – कुक्कुट	20 – कालचक्र	36 – किर्तिनाशक	52 – क्रोधसन्निभ
5 – स्वस्तिक	21 – त्रिपुर	37 – श्रृंगार	53 – महन्त
6 – हंश	22 – सुन्दर	38 – श्रीवाश	54 – महित
7 – वर्धन	23 – नील	39 – श्रीशोभ	55 – दुःख
8 – कर्बुर	24 – कुटिल	40 – कीर्तिशोभन	56- कुलच्छेद
9 – शान्त	25 – शाश्वत	41 – युग्मशिखर	57- प्रताप वर्धन
10 – हर्षन	26 – शास्त्रद	42 – बहुलाभ	58 –दिब्य
11 – विपुल	27 – शील	43 – लक्ष्मी निवास	59 – बहुदुख
12 – कराल	28 – कोटर	44 – कुपित	60 – कन्ठ च्छेदन
13 – वित्त	29 – सौम्य	45 – उद्योत	61 –जंगम
14 – चित्र	30 – सुभद्र	46 – बहुतेज	62 –सिंघनाद
15 – धन	31 – भद्रमान	47 – सुतेज	63 – हस्तिज
16 – कालदण्ड	32 – क्रूर	48 – कलहावह	64 – कण्ठक

द्विशाल घर के लक्षण – द्विशाल घर की भूमि की लम्बाई व चौड़ाई के तीन भाग करने से नौ भाग हो जाते है। इनमें से मध्यभाग को छोड़कर शेष आठ भागों में से दो भागों में शाला बनाना चाहिए। शेष भाग की भूमि खाली रखनी चाहिए इसी प्रकार चार दिशाओं में चार प्रकार की शाला होती है। इस प्रकार अनेक तरह के घर बनते हैं जिसका विशेष उल्लेख समरांगण एवं राजबल्लभ आदि ग्रन्थों में मिलता है। एवं शांतवन आदि गृहों के बारे में यहाँ पर केवल नाम मात्र का ही उल्लेख किया चूँकि विस्तार भय के कारण इनके फल तथा लक्षणों के बारे में बताना सम्भव नहीं है फिर कुछ मुख्य गृहों का फल आप को इस प्रकार समझना चाहिए ,शाश्वत घर सभी मनुष्यों के लिए शान्ति दायक होता है। युग्मश्रीधर घर बहुत मंगलदायक धन से परिपूर्ण करता है ,इसी प्रकार महान्त घर में निवास करने वाला भी धनवान होता है, जंगम घर भी अच्छा यश फैलाने वाला होता है, बहुलाभ घर भी विपुल सम्पदा को देने वाला होता है, लक्ष्मीनिवास घर में निरन्तर लक्ष्मी बनी रहती है, कुपित घर में कलह ,अनबन वाद – विवाद बना रहता है। बहुतेज घर में भवन स्वामी की उन्नति होती है, सुतेज घर दक्षिणाभिमुख होने के वावजूद भी सामान्य अच्छा फल ही देता है, कलाहावह घर में निरन्तर कलह बनी रहती है । गृहस्थों को गोल घर नहीं बनाना चाहिए किन्तु राजा लोग गोल मकान बना सकते हैं। सामान्य लोगों के लिए गोल या वर्तुलाकार मकान निर्माण से अस्थिरता एवं अर्थसंकट से त्रस्त रहते हैं इस लिए ऐसा गृह नहीं बनवाना चाहिए। और भी अधोलित चक्र से आप फल को समझ सकते हैं -

दो दिशाओं में शाला	शाला मुख विचार	नाम
दक्षिण व आग्नेय	उत्तर	करिणी (हस्तिनी) शाला
नैऋत्य व पश्चिम	पूर्व	महिषी शाला
वायब्य व उत्तर	दक्षिण	गावीशाला
पूर्व व ईशान	पश्चिम	छागी शाला
घर का नाम	शालाओं के नाम	फल
सिद्धार्थ	कारिणी व महिषी	शुभ
यम सूर्य	गावी व महिषी	मृत्यु
दण्ड	छागी व गावी	धन हानि
काच	छागी व हस्तिनी	हानिकारक
चुल्हि	गावी व हस्तिनी	अशुभ

घरों के अन्य प्रकार के बारे में इस प्रकार समझना चाहिए कि उक्त 64 प्रकार के गृहों के अतिरिक्त सूर्यादि आठ प्रकार के घर भी होते हैं जो निम्नलिखित हैं, सूर्य – वासव – वीर्य – काल – सुब्रत – बुद्धि –प्रासाद – द्विवेध है।

1– सूर्य – द्विशाल घर के आगे तीन अलिन्द हों तथा बायीं ओर एक-एक शाला स्तम्भ सहित हो, यह मकान स्वामी को सूर्य के समान बृद्धि कारक बनाता है।

2– वासव – द्विशाल घर के आगे चार अलिन्द हो। बायीं तथा दाहिनी तरफ एक – एक शाला हो। यह मकान परिवार को युग –युगों तक स्थाई बनाता ।

3– वीर्य – जिस द्विशाल घर के आगे तीन अलिन्द हों एवं पीछे की तरफ दो अलिन्द हों वायीं तथा दायीं तरफ एक – एक अलिन्द हो तो इस प्रकार का घर सभी वर्णो के लिए हितकारी होता है।

4– काल – द्विशाल घर के आगे – पीछे दो –दो अलिन्द हों तथा दायीं ओर एक अलिन्द हो तो इस प्रकार का घर परिवार के लिए अकाल मृत्यु तथा दुर्भिक्ष का कारण बनता है इस लिए अशुभ समझना चाहिए।

5– सुब्रत – द्विशाल घर के चारों तरफ दो –दो अलिन्द हों तो इस प्रकार का घर सभी प्रकार के सिद्धि को प्रदान करने वाला होता है।

6– बुद्धि – द्विशाल घर के आगे तीन अलिन्द हों, बायीं और दाहिनी तरफ दो अलिन्द हों, पीछे की तरफ एक अलिन्द हों तो इस प्रकार का घर परिवार के लिए बुद्धि वर्धक होता है।

7– प्रासाद - द्विशाल घर के आगे तीन अलिन्द तथा तीनों दिशाओं में दो –दो अलिन्द हों तो परिवार के लिए शुभ फल दायक होता है।

8– द्विवेध – घर के आगे तीन अलिन्द हों तथा पीछे की तरफ तीन अलिन्द हों तो ऐसा घर सामान्यतया अशुभ ही समझना चाहिए। चूँकि वास्तुशास्त्र के अनुसार यह उल्लेख मिलता है कि त्रैलोक्य सुन्दर आदि चौसठ घर राजाओं के लिए श्रेष्ठ एवं उपयुक्त होते है। अब यहां पर एकशाल आदि गृहों को समझना आवश्यक है इसलिए इसको समझते हैं–

एकशाल गृह का कमरा दक्षिण भाग में बनता है और उसका द्वार उत्तर की ओर होता है, यदि एकशाल गृह की चारों दिशाओं में द्वार हो तो उस घर को" विश्वतो मुख" कहते हैं, ऐसा घर सभी मनोरथों को सिद्धि करने वाला होता है।

यदि पश्चिम में कोई द्वार न हो (अन्य तीन दिशाओं में द्वार हों) तो उस घर को" विजय" कहते हैं ऐसा घर सर्वदा धन –सम्पत्ति तथा पुत्र – पौत्र की वृद्धि करने वाला होता है। यदि उत्तर में कोई द्वार न हों उस घर को "सुकर" कहते हैं। ऐसे घर में सूकरों से अथवा राजा से भय होता है। यदि पूर्व में तो उस घर को "व्याघ्रपद" कहते हैं ऐसे घर में पशु तथा चोर से भय होता है। यदि दक्षिण में कोई द्वार न हो तो उस घर को शेखर कहते हैं, ऐसा घर सब वस्तुओं तथा रत्नों को देने वाला होता है।

द्विशाल गृह – यदि पश्चिम या दक्षिण दिशाओं में दो कमरे हों तो उस घर को "सिद्धार्थ "कहते हैं। ऐसा घर धन-धान्य देने वाला, क्षेम की वृद्धि करने वाला तथा पुत्र प्रद होता है। यदि पश्चिम और उत्तर दिशाओं में दो कमरे हों तो उस घर को "यमसूर्य "कहते हैं, ऐसा घर गृह स्वामी के लिए मृत्युदायक, राजा, शत्रु , चोर और अग्नि से भय होता है।यदि उत्तर और पूर्व दिशा में दो कमरे हों उस घर को दण्ड कहते हैं, ऐसा घर अकाल मृत्यु तथा शत्रुओं से भय प्रदान करने वाला होता है। यदि पूर्व और दक्षिण दिशा में दो कमरे हो तो उस घर को "वात "कहते हैं, ऐसा घर सदा कलह करने वाला, सर्प ,चोर तथा शस्त्र से भय देने वाला, एवं पराजय की स्थिति उत्पन्न करने वाला होता है। यदि पूर्व व पश्चिम दिशाओं में दो कमरे हों तो उस घर को "चुल्ली" कहते हैं, एसा घर धन का नाश करने वाला, मृत्यु देने वाला, स्त्रियों को विधवा करने वाला तथा अनेक भय देने वाला होता है। यदि दक्षिण और उत्तर दिशाओं में दो कमरे हों तो उस घर को "काच" कहते हैं, ऐसा घर बन्धुओं से विरोध करने वाला तथा भयदायक होता है।

त्रिशाल गृह – यदि मकान के भीतर उत्तर दिशा में कोई कमरा न हो (शेष तीन दिशाओं में तीन कमरे हों) तो उस घर को "हिरण्य" या "धान्यक" कहते हैं, ऐसा घर क्षेमकारक, वृद्धिकारक

तथा अनेक पुत्र देने वाला होता है। यदि पूर्व दिशा में कोई कमरा न हो तो उस घर को "सुक्षेत्र" कहते हैं, ऐसा घर धन, पुत्र, यश और आयु को देने वाला तथा शोक मोह को नाश करने वाला होता है। यदि दक्षिण दिशा में कोई कमरा न हो तो उस घर को विशाल कहते हैं। ऐसा घर धन नाश एवं रोगप्रद होता है। यदि पश्चिम दिशा में कोई कमरा न हो तो उस घर को "पक्षघ्न" कहते हैं, यह भी अशुभ ही होता है। हैं। ऐसा घर राजा और देवता (मन्दिर) के लिए शुभ होता है अन्य के लिए नहीं। यदि पश्चिम दिशा में द्वार न हो (शेष तीन दिशाओं में द्वार न हों) तो उस घर को "नन्द्यावर्त "कहते हैं। यदि दक्षिण दिशा में द्वार न हों तो उस घर को "वर्धमान" कहते हैं। यदि पूर्व दिशा में द्वार न हों उस घर को "स्वस्तिक" कहते हैं। यदि उत्तर दिशा में द्वार न हों तो उस घर को "रुचक" कहते हैं।

नन्द्यावर्त तथा वर्धमान घर सबके लिए शुभ है। स्वस्तिक तथा रुचक मध्यम फल देने वाला होता है।

इसके अतिरिक्त मन्दिर के भवन 20 प्रकार के होते है जिनका नाम इस प्रकार जानना चाहिए – 1 . मेरु 2 . मंदर 3 . कैलाश 4. विमनाच्छद 5 . नन्दन 6 . समुद्र 7. पद्म 8 . गरुड़ 9 . नन्दिवर्धन 10 . कुन्जर 11. गुहराज 12. वृष 13. हंश 14. सर्वतोभद्र 15. घट 16. सिंह 17. वृत्त 18. चतुष्कोण 19. षोडशाश्री 20. अष्टाश्री ये 20 प्रकार के देवालय होते है ।इन मन्दिर गृहों के निर्माण सम्बन्धित अधिक जाकारी के लिए वृहद्वास्तुमाला के पृष्ठ संख्या 185 पर देख सकते हैं।

3.2.1 वास्तु निर्माण की आयोजना

इसमें मुख्य बात पर विचार यह है कि घर के किसी भी अंश को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। यदि बढ़ाना हो तो सभी दिशाओं में समान रूप से बढ़ाना चाहिए। क्योंकि कहा भी गया है कि घर को पूर्व दिशा में बढ़ाने पर मित्रों से वैर होता है, दक्षिण दिशा में बढ़ाने पर मृत्यु का तथा शत्रु का भय, पश्चिम दिशा में बढ़ाने पर धन का नाश होता है, उत्तर दिशा में बढ़ाने पर मानसिक संताप की वृद्धि होती है, आग्नेय दिशा में बढ़ाने पर अग्नि से भय होता है, नैऋत्य दिशा में बढ़ाने पर अग्नि से भय होता है, नैऋत्य दिशा में बढ़ाने पर शिशुओं का नाश होता है, वायव्य दिशा में बढ़ाने पर

वात – व्याधि उत्पन्न होती है, ईशान दिशा में बढ़ाने पर अन्न की हानि होती है।

यदि घर के किसी अंश को आगे बढ़ाना बहुत आवश्यक हो तो पूर्व या उत्तर की तरफ बढ़ा सकते हैं, क्योंकि इस दिशा में थोड़ा कम दोष है। वास्तु का निर्माण निश्चित करने के उपरान्त यह विचार करना आवश्यक है कि कहां – कहां पर क्या निर्माण करना आवश्यक है किस दिशा में कौन सा कमरा होना चाहिए इस बात को अधोलिखित चक्र से समझना चाहिए –

प्रथम आयोजना -

वायव्य		उत्तर		ईशान
	धन अन्न संग्रह	जल स्थान	देव स्थान	
पश्चिम	भोजनालय		श्री गृह	पूर्व
	शस्त्र गृह प्रसूति गृह	शयन कक्ष	रसोई	
नैऋत्य		पश्चिम		आग्नेय

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

अन्य मतों के अनुसार इन सभी घरों के मूल द्वार की अपेक्षा से पूर्व आदि दिशा का विभाग करना चाहिए अर्थात् जिस दिशा में घर का मुख्यद्वार हो उसे पूर्व मानकर गृह निर्माण करना चाहिए – द्वितीय आयोजना वस्तुसार संग्रह के अनुसार –

वायव्य		उत्तर		ईशान
	आयुधकक्ष	धनसंग्रह	धर्मस्थान	
पश्चिम	भोजनगृह		सिंह द्वार	पूर्व
	नीहारगृह (शौचालय)	शायनकक्ष	रसोई	
नैऋत्य		दक्षिण		आग्नेय

यहां पर इस बात को ध्यान देना चाहिए कि मध्य में स्थान में कोई वजनी वस्तु अथवा उच्छिष्ट वस्तु रखने से गृह स्वामी को क्लेश होता है। तथा ब्रह्म स्थान एवं मर्म स्थान में कोई निर्माण नहीं करना चाहिए – तृतीय आयोजना विश्वकर्मा प्रकाश के अनुसार –

वायव्य			उत्तर			ईशान
	अन्नगृह	रतिगृह	धन धान्य संग्रह	औषधगृह	देवगृह	
	शोकगृह				सर्वधाम	
पश्चिम	भोजन शाला				स्नानागार	पूर्व
	विद्याभ्यास गृह				बधि मथन स्थान	
	शस्त्रागार	शौचालय	शयनगृह दक्षिण	घी तेल संग्रह चक्की स्थान	रसोई	
नैऋत्य			दक्षिण			आग्नेय

चतुर्थ आयोजना –

वायव्य		उत्तरी वायव्य	उत्तर	उत्तरी ईशान		ईशान
	पशुशाला	रतिगृह	धन धान्य संग्रह	वैद्यगृह	देवगृह	
पश्चिम वायव्य	शोकगृह				प्रसूतिगृह	पूर्वी ईशान
पश्चिम	भोजन शाला				स्नानागार	पूर्व
पश्चिम नैऋत्य	विद्याभ्यास कक्ष				वधिमथन गृह	पूर्वी आग्नेय
	सामानगृह	शौचालय	शयनकक्ष	आज्य तेल गृह	रसोई	
नैऋत्य		दक्षिणी नैऋत्य	दक्षिण	दक्षिणी आग्नेय		आग्नेय

पंचम आयोजना - नारद संहिता के अनुसार

वायव्य		उत्तर		ईशान
	श्रृंगारगृह	श्रीगृह	आज्य तेल गृह	
पश्चिम	भोजनगृह		स्नानगृह	पूर्व
	शस्त्र, धान्य, रति, धनगृह	शयनगृह	रसोई शौचालय	
नैऋत्य		दक्षिण		आग्नेय

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

षष्ठ आयोजना वृहत्संहिता के अनुसार –

वायव्य		उत्तर		ईशान
	धन धान्य गृह		देव स्थान	
पश्चिम				पूर्व
	सामान गृह	शयनगृह	रसोई	
नैऋत्य		दक्षिण		आग्नेय

सातवीं आयोजना किरन तन्त्र के अनुसार

वायव्य		उत्तर		ईशान
	धान्य गृह पशु गृह	धन संग्रह कक्ष	देव स्थान	
पश्चिम	भोजन गृह		स्नानागार	पूर्व
	सामान गृह	शयनगृह	रसोई	
नैऋत्य		दक्षिण		आग्नेय

आठवीं आयोजना वास्तु चिन्तामणि के अनुसार

वायव्य		उत्तर		ईशान
	धान्य गृह पशु गृह	धन संग्रह कक्ष	देव स्थान	
पश्चिम	भोजन गृह		स्नानागार	पूर्व
	सामान गृह	शयनगृह	रसोई	
नैऋत्य		दक्षिण		आग्नेय

टिप्पणी -1 - इस प्रकार आप वास्तु की आयोजना बनाकर भूखण्ड पर गृह निर्माण कर सकते हैं, चूँकि वास्तुशास्त्र के अनुसार चौकोर ,आयताकार, भद्रासन, और वृताकार – इन चार घरों को श्रेष्ठ बताया गया है । यद्यपि चौकोर घर को सभी ग्रन्थों में उत्तम बताया गया है परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा विश्वकर्मा जी के प्रति इस प्रकार का वचन प्राप्त होता है – चौकोर घर गृहस्थों के लिए धन सम्पत्ति का ह्रास करने वाला होता है, इसलिए घर की लम्बाई –चौड़ाई में अलग – अलग दो का भाग दें, यदि शुन्य शेष आये तो वह घर मनुष्य के लिएशुन्य प्रद होता है, यदि शेष शुन्य नहीं आवे तो वह घर लाभदायक होता है । आयताकार गृह में चौड़ाई के दोगुनी से अधिक लम्बाई नहीं होनी चाहिए यह अशुभकर है, चक्र के समान घर में दरिद्रता आती है, विषमवाहु घर में शोक होता है, शकट के समान घर में सुख और धन की हानि होती है, दण्ड के समान घर में पशुओं की हानि तथा वंश का नाश होता है,

टिप्पणी 2 -   मृदंग के समान घर में स्त्री की मृत्यु, वंश की हानि तथा बन्धुनाश होता है, पंक्षी के समान घर होने से धन का नाश होता है, कछुए के समान घर होने से बन्धन और पीड़ा होती है, धनुष के समान घर में चोर आदि का भय होता, ऐसे घर में मुर्ख एवं पापी पुत्र पैदा होता है, कुम्भ के समान घर में कुष्ट रोग होता है, मुद्गर के समान घर में पुरुषार्थ की हानि होती है । कुल्हाड़ी के समान घर में मुर्ख एवं पापी पुत्र उत्पन्न होता, तीन कोने वाले घर में राजभय –पुत्र की हानि, दुःख, वैधब्य एवं मृत्यु होती है । पांच कोने वाले घर में सन्तान को कष्ट होता है यह घर विनाशकारक होता है, छः कोने वाला घर मृत्यु एवं क्लेश कारक होता है, सात कोने वाला घर अशुभकर होता है, आठ कोने वाले घर में रोग तथा शोक होता है, छागज के समान घर में धन धन एवं गायों का नाश होता है, चौड़े मुख वाले घर में वन्धुओं का नाश होता है ।

विशेष – गृह के आय जानने की विधि – घर की चौड़ाई को लम्बाई से गुणा करने पर जो गुणनफल प्राप्त हो उसे

“पद” कहते है । उस पद को (छः जगह अलग – अलग रखकर) क्रमशः 8, 3, 9, 8, 9, 6 से गुना करें, और गुणनफल में क्रमशः 12, 8, 8, 27, 7, 9 से भाग दें । फिर जो शेष बचे, वह क्रमशः धन, ऋण, आय ,नक्षत्र ,वार तथा अंश आता है । इनके बारे में आप को इस प्रकार समझना चाहिए –

1. धन - यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो वह घर शुभ होता है ।
2. ऋण - यदि धन की अपेक्षा ऋण अधिक हो तो वह घर अशुभ होता है
3. आय – यह आठ प्रकार की होती है, 1 . ध्वज 2 . धूम्र 3 . सिंह 4 . स्वान 5 . वृष 6 . खर 7 . गज 8 . उष्ट्र अथवा काक । यदि आय विषम (1, 3, 5, 7) हो तो शुभ है और सम (2, 4, 6, 8) हो तो अशुभ है ।
4. नक्षत्र – घर का जो नक्षत्र हो, वहां से अपने नाम के नक्षत्र तक गिनकर जो संख्या हो, उसमें 9 का भाग दें यदि शेष 3 बचे तो धन का नाश, 5 बचे तो यश की हानि और 7 बचे तो गृह कर्ता की मृत्यु होती है । घर की राशि और अपनी राशि गिनने पर परस्पर 2 या 12 हो तो धन की हानि, 9 या 5 हो तो पुत्र की हानि और 6 या 8 हो तो अनिष्ट होता है, अन्य संख्या हो तो शुभ समझना चाहिए ।

5. वार तथा अंश – सूर्य का (1) और मंगल (3)के वार तथा अंश हो तो उस घर में अग्निभय होता है। अन्य वार एवं अंश होने से सम्पूर्ण अभीष्ट की सिद्धि होती है।

3.2.2 वास्तु निर्माण का आकार

भूमि के आकार की तरह वास्तु या घर के आकार का महत्व है, वास्तु आकार यथा सम्भव चतुष्कोण अर्थात् वर्गाकार या आयताकार ही रहना चाहिए। यह निवासियों के लिए सुख शान्ति देता है। यदि वास्तु या मकान का कोई भी कोना बड़ा या कटा हुआ होगा तो उसका प्रभाव वास्तु पर पड़े बिना नहीं रहता। इसका विवेचन इस प्रकार है –

1. ईशान दिशा के कोने का कटा रहना (या अभाव होना) या अन्दर धसा रहना सुख – समृद्धि एवं वंशनाश का हेतु बनता है।
2. पूर्व दिशा का कोना नहीं रहने से परिवार में शान्ति का अभाव होकर प्रति दिन कलह प्रदान करता है।
3. आग्नेय दिशा में कोना न होने या धसा हुआ होना कुछ शुभ प्रद बताया गया है।
4. वायव्य दिशा में कोना न रहने या धसा हुआ होने पर आर्थिक संकट आते हैं।
5. नैऋत्य दिशा में कोना न होने से या धसा हुआ होने से हानि नहीं होती है ब्यापार ठीक रहता है तथा शुभ फल मिलता है।
6. वास्तु की कोई भी दिशा या विदिशा का अन्दर की ओर धसा रहना अनेकों लाभ से कोसो दूर कर देता है।
7. यदि जमीन और परकोटा समानान्तर है किन्तु मुख्य वास्तु दिशाओं के समानान्तर नहीं होगी या वास्तु के कोने विदिशाओं की ओर मुख करके बने हों तो वह वास्तु अयोग्य है तथा उसमें निवास करने पर निरन्तर उपद्रव होते रहते हैं।
8. जमीन और परकोटा समानान्तर न रहने पर यदि मात्र वास्तु समानान्तर हों तो उसे भी अयोग्य समझा जाता है। एसी वास्तु निर्माण करने वालों को स्थिरता नहीं प्रदान करती है।
9. जमीन की पूर्व दिशा की भूमि या वास्तु कटी होने पर गृह स्वामी की शक्ति क्षीण होती है तथा अपमान होता है।
10. दक्षिण दिशा की जमीन कम होने पर भी शुभ होता है।
11. पश्चिम दिशा की जमीन या वास्तु कम होने पर भी मध्यम फल मिलता है।
12. उत्तर दिशा की जमीन या वास्तु कम होने पर धन नाश होता है।
13. सामान्य रूप से भूमि और वास्तु का चौकोर (आयताकार या वर्गाकार) होना अत्यन्त शुभ है।
14. पूर्व दिशा की ओर जमीन का या वास्तु निर्माण का भाग अधिक हो तो स्वामी को कृति, प्रतिष्ठा मिलती है किन्तु वंश वृद्धि की दृष्टि से हानिकारक होता है।
15. दक्षिण दिशा की ओर जमीन का या वास्तु निर्माण का भाग अधिक हों तो दरिद्रता का सामना करना पड़ता है।

16. उत्तर दिशा की ओर जमीन का या वास्तु निर्माण का भाग अधिक हो या बाहर निकला हो तो धन-धान्य की वृद्धि होती है साथ ही वंश वृद्धि भी होती है।

17. पश्चिम दिशा की ओर जमीन का या वास्तु का निर्माण अधिक होने पर एश्वर्य का नाश होता है।

देवालय, प्रसाद अथवा आश्रम, मठ आदि वास्तु कर हीन अर्थात् दायें – बायें और छोटे – बड़े होना अशुभ है। ऐसा होने से स्त्री नाश, शोक, संताप एवं गृह स्वामी का धन नाश होता है।

इसी तरह यह भी कहा गया है कि यदि घर बायीं ओर बड़ा तथा दाहिनी ओर छोटा हो तो ऐसा घर अन्तक गृह कहलाता है तथा कुल एवं सम्पत्ति का नाश करने के कारण अशुभ प्रतीत होता है।

घर के दोनों भाग सम्पार्श्व होना चाहिए । यदि दाहिनी ओर बड़ा हो तथा उसमें बड़ा भाई या ज्येष्ठ भ्राता निवास करें तो दोष नही होता है इन सभी बातों का विचार करके आप को वास्तु निर्माण करवाना चाहिए।

3.2.3 भूखण्डो का वर्गीकरण

आधुनिक परिवेश में निर्मित भवनों के लिए वास्तु सिद्धान्त समान रूप से कार्यकारी है, बालकनी, चबूतरा, गोल सीढ़िया, लिफ्ट, सैप्टिक टैंक, शौचालय इत्यादि बातों का विचार करना आवश्यक है। जहाँ तक बात करें तो भूखण्डों का वर्गीकरण चार प्रकार से किया जा सकता है। 1 . ऊतम श्रेणी के भूखण्ड 2 . मध्यम श्रेणी के भूखण्ड 3. अधम श्रेणी के भूखण्ड 4. अति जघन्य श्रेणी के भूखण्ड।

उत्तम श्रेणी के भूखण्ड – जिस भूखण्ड के चारों ओर सड़क हो एवं पूर्व –उत्तर की सड़के, दक्षिण एवं पश्चिम की सडकों से नीची हों एवं ईशान कोण विस्तृत हो। अथवा पूर्व पश्चिम उत्तर में सड़क हो ,एवं पश्चिम की सड़क पूर्व एवं उत्तर की सड़क से अधिक ऊँची हो एवं पश्चिम में बहुमंजिली इमारत हो, अथवा पश्चिम एवं उत्तर में सड़क हो एवं पश्चिम वायव्य में मार्गारम्भ हो। इसके अतिरिक्त पूर्व एवं उत्तर में सड़क हो एवं ईशान दिशा में मार्ग हो एवं पूर्व व उत्तर की सडकें भूखण्ड से ऊँची न हो। इन भूखण्डों पर वास्तु निर्माण प्रारम्भ करने से पूर्व ध्यान रखें की यदि भूखण्ड सतह से पूर्वी सड़क ऊँची हो तथा उत्तरी सड़क नीची हो तो प्रवेश उत्तर से रखें। इसी प्रकार उत्तरी सड़क ऊँची हो तथा पूर्वी सड़क नीची हो तो प्रवेश पूर्व से रखें। यदि किसी कारण यह सम्भव न हो तथा ऊँची सड़क के तरफ ही प्रवेश द्वार रखना हो तो पुरे भूखण्ड का तल भरकर ऊँचा करना चाहिए।

मध्यम श्रेणी के भूखण्ड – पश्चिम तथा पूर्व में सड़क हो पूर्व का सड़क, पश्चिम के सड़क से नीची हो ,अथवा उत्तर तथा दक्षिण में सड़क हो तथा उत्तर की सड़क दक्षिण के सड़क से नीची हो, अथवा पूर्व में सड़क हो जो भूखण्ड से नीची हो तथा पश्चिम और दक्षिण में बहुमंजिली इमारत हो, अथवा उत्तर दक्षिण पूर्व में सड़क हो तथा पूर्व या उत्तरी सड़क भूखण्ड से ऊँची हो , अथवा उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम में सड़क हो तथा पश्चिमी सड़क, उत्तरी एवं पूर्वी सड़क से ऊँची हो, अथवा तीन तरफ सड़क हो तथा पूर्व और उत्तर की सड़क भूखण्ड से ऊँची हो, अथवा उत्तर ,पूर्व ,पश्चिम में सड़क हो तथा पश्चिमी सड़क भूखण्ड से नीची हो, अथवा उत्तर, पूर्व ,दक्षिण में सड़क हो तथा दक्षिणी सड़क भूखण्ड से नीची हो तो ऐसे भूखण्ड को मध्यम श्रेणी का भूखण्ड समझना चाहिए।

अधम श्रेणी के भूखण्ड – पूर्व में नीची सड़क हो तथा पश्चिम ,दक्षिण ,उत्तर में बहुमंजिली इमारत या पहाड़ियाँ हों, अथवा पूर्व एवं दक्षिण में सड़क हो तथा पूर्व एवं दक्षिण की सड़कें जुड़ी हों एवं पूर्व की सड़क नीची हो ,अथवा पश्चिम या दक्षिण में भूखण्ड से नीची सड़क हो तथा पूर्वी या उत्तरी दिशा में पहाड़ियाँ या ऊँची इमारतें हो तथा तीन तरफ सड़क हो, अथवा उत्तर एवं दक्षिण में सड़क हों दक्षिण सड़क उत्तरी सड़क से नीची हो, पूर्व में ऊँची इमारत या पहाड़ियाँ हों तथा पश्चिम में खाली भूमि हो तो ऐसे भूखण्डों को अधम श्रेणी का भूखण्ड समझना चाहिए।

अति जघन्य श्रेणी के भूखण्ड - पूर्व एवं दक्षिण की ओर सड़क हो, तथा पूर्व एवं उत्तर के तरफ ऊँची इमारत या पहाड़ियाँ हो, अथवा पूर्व एवं दक्षिण में भूखण्ड से नीची सड़क हो तथा पूर्व एवं दक्षिण में ऊँची इमारत या पहाड़ियाँ हों, अथवा सिर्फ दक्षिण में भूखण्ड से नीची सड़क हो तथा पूर्व या उत्तर में कोई खाली स्थान न हो तो इस प्रकार के भूखण्ड अतिजघन्य (अत्यन्त अधम कोटि)के भूखण्ड के अन्तर्गत आते हैं परन्तु उक्त प्रकार के भूखण्ड पर धरातल के उतराव- चढ़ाव इत्यादि का पूरा ध्यान रखते हुए यदि वास्तु निर्माण कार्य किया जायेगा तो निश्चय ही निम्नकोटि का भूखण्ड भी अपने पुरुषार्थ एवं वास्तु संरचना के अनुकूल अधिकाधिक फल प्रदाता होगा।

परन्तु वर्तमान समय में भवन निर्माण सामान्य कालोनियों में अथवा उपनगरों में किए जाते हैं। इन भवनों की स्थिति उनके धरातल से ढलान, चढ़ाव आस – पास के वृक्ष आदि के अतिरिक्त उनसे लगने वाली सड़को से भी प्रभावित होती है। प्राचीन ग्रन्थों में यथा सम्भव पूर्व या उत्तर में ही सिंह द्वार अथवा कुबेर द्वार निर्माण करने का उल्लेख किया गया है। वर्तमान काल में जनसंख्या वृद्धि तथा शहरीकरण की बृद्धि के कारण भूमि एवं भवनों का मूल्य तो बढ़ा ही है साथ ही सुलभता भी समाप्त हो गयी है। इसी परिस्थिति में उपलब्ध भूखण्ड पर यथा सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए कि वास्तु नियमों के अनुकूल हो। साधारण भूखण्डो के पास में एक अथवा दो सड़क होती है किन्हीं भूखण्डों में तीन पार्श्व में सड़क होती है चारों तरफ सड़क वाले भूखण्ड नगण्य अथवा कम ही है। सड़को के पार्श्व के अनुरूप भूखण्डों का वर्गीकरण किया जा सकता है। जिन भूखण्डों में दो पार्श्व में सड़क है उनके नाम उन पार्श्वों के मध्य की विदिशा के नाम पर कहे जाते हैं इनको इस प्रकार समझना चाहिए।

क्रम संख्या	भूखण्ड का नाम	लक्षण
1 .	पूर्वी	जिनके मात्र पूर्व के तरफ सड़क हो।
2 .	उत्तरी	जिनके मात्र उत्तर की ओर सड़क हो।
3 .	पश्चिमी	जिनके मात्र पश्चिम की ओर सड़क हो
4 .	दक्षिणी	जिनके मात्र दक्षिण के तरफ सड़क हो
5 .	ईशान	जिनके मात्र पूर्व –उत्तर की ओर सड़क हो
6 .	आग्नेय	जिनके मात्र पूर्व व दक्षिण की ओर सड़क हो
7 .	नैऋत्य	जिनके मात्र पश्चिम व दक्षिण की ओर सड़क हो
8 .	वायव्य	जिनके मात्र पश्चिम एवं उत्तर की ओर सड़क हो

इन भूखण्डों को वास्तु के अनुरूप तथा उसके नियमों को ध्यान में रख कर ही वास्तु निर्माण करना चाहिए प्रस्तुत भूखण्ड के आधुनिक सन्दर्भ में भूतल की अपेक्षा, निर्माण कार्य की अपेक्षा उपयुक्त सिद्धांतों का पुरुषार्थ करके एसी वास्तु की संरचना अपेक्षित और उचित है जो नियमानुसार हो, कुछ स्थलों पर बाधायें भी आती है जिसके कारण भूस्वामी विवश हो जाते हैं, परन्तु इसका मूल सिद्धान्त भूखण्ड क्रय करते समय इन सभी बातों का ध्यान रखा जाय तो सब कुछ अनुकूल साबित होगा – जैसे – पूर्व एवं उत्तरी दिशा में तल नीचा हो तथा निर्माण कार्य की उचाई इन दिशाओं में नीची हो तो इन दिशाओं में कम निर्माण करना चाहिए तथा अधिक खाली स्थान छोड़कर निर्माण कार्य आरम्भ करना चाहिए, सडकों की अपेक्षा से विभक्त इन भूखण्डो में इसी मूल भावना को ध्यान में रखकर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए इतना ध्यान देना चाहिए कि पुराने भवनों को सुधार करते समय कम से कम तोड़ – फोड़ करना पड़े। यथा सम्भव वर्तमान परिस्थिति में दिशाओं के संतुलन के अनुरूप वाह्य एवं आन्तरिक साज –सज्जा एवं सामान की स्थिति में परिवर्तन करके अपनी वास्तु को नियमानुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

3.3 आधुनिक वास्तुशास्त्र

आधुनिक वास्तु या प्रचीन वास्तु का सीधा आशय यह है कि यह एक स्थापत्य है, अर्थात् भवन, देवालय, प्रसाद आदि संरचनाओं का निर्माण, इस प्रकार के निर्माण की कला एवं विज्ञान, आधुनिक वास्तुशास्त्र में समाहित होते हैं। कला पक्ष में आकर्षण सूक्ष्म एवं स्थूल शिल्प कला का समावेश होता है जब कि आधुनिक पक्ष में धरातल, वायुमण्डल, दिशाओं , सूर्य की गति एवं ऊष्मा आदि का तथा आस –पास के परिकर का विचार करके, वास्तु के अनुकूल एवं प्रतिकूल (शुभाशुभ) फलों को ध्यान में रखते हुए संरचना का निर्माण किया जाता है दिशाओं की स्थिति समझकर उसके अनुरूप निर्मित संरचनाओं का सुपरिणाम निश्चित ही देखने को मिलते हैं। धरातल का ऊँचा – नीचा, ढलान ,चढ़ाव आस-पास वृक्ष, कुआं ,पहाड़ी, ऊँची ईमारत आदि का प्रभाव भी इस विषय में सम्मिलित है।

वर्तमान युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है, विज्ञान पर विश्वास करने वाला समुदाय प्राचीन मान्यताओं को तर्क एवं प्रमाण की कसौटी पर परखते हैं। यदि कोई भी मान्यता ब्यवहारिक प्रयोग में तथ्यपरक परिणाम प्रकट नहीं करती है तो विज्ञान उसे कल्पना मानता है वास्तु विज्ञान में उल्लिखित सैद्धान्तिक मान्यताओं को प्रमाण एवं तर्क की कसौटी पर रखने से उनमें यथार्थता परिलक्षित होती है, दिशाओं का ज्ञान, धरातल का ज्ञान, सूर्य का प्रकाश एवं चुम्बकत्वधारा का ज्ञान आदि सभी विज्ञान सम्मत है निश्चय ही इनका प्रभाव प्राणी मात्र के जीवन पर पड़ता है। चूँकि वास्तु नियम यह प्रतिपादित करता है कि दक्षिण –पश्चिम भाग हमेशा ऊँचा होना चाहिए एवं दीवारे मोटी बनानी चाहिए साथ ही इस दिशा में सीढी इत्यादि का भार देना चाहिए, इसका उद्देश्य है कि पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा दक्षिण दिशा में करती है तो सूर्य एक विशेष कोणीय स्थिति में होता है, अत: इस क्षेत्र में अधिक भार से संतुलन बना रहता है तथा ऊँची तथा मोटी दीवार अधिक ऊष्मा से रक्षा करती है, जिससे भवन में गर्मी के मौसम में भी शीतलता एवं सर्दियों में गर्मी का अनुभव प्राप्त होता है। इसी प्रकार वास्तु नियम में दक्षिण –पूर्व (आग्नेय) कोण में भोजन बनाने का निर्धारण किया गया है क्योंकि इस क्षेत्र में पूर्व से प्रात : कालीन ताजगी से भरी हवा एवं सूर्य रश्मियों का प्रवेश होता है जिससे कि भोजनालय में रखे समान अधिक समय तक स्वच्छ(ताजा) बने रहते हैं।

चूँकि वास्तु प्राचीन काल से अस्तित्व में है लेकिन आधुनिकी करन के साथ वास्तु के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन आया है, उदाहरण के लिए वैदिक आर्किटेक्चर द्वारा स्ट्रा के रूप में पहचाने जाने वाले सरल लेकिन महत्वपूर्ण संरचनात्मक सदस्य को जो आज हाई टेक इंजीनियरिंग द्वारा केबल के रूप में पहचाना जाता है स्ट्रा तनाव से खिचाव का प्रतीक है। केबल तनाव से खिचाव का भी प्रतीक है। वास्तुशास्त्र में कहा गया है कि हर सिविल और कस्ट्रक्शन इंजीनियर को पता होना चाहिए छत से ईट के दीवार पर लोड ट्रांस्फर मुख्य रूप से कम्प्रेशन के जरिए होता है, इसके अलावा प्राचीन वास्तुकार न केवल संरचनात्मक इंजीनियरिंग से बल्कि निर्माण सामग्री से सम्बन्धित निर्माण तकनीक से भी परिचित थे इस तरह की खोज किसी को भी यह विश्वास दिलाती है कि आधुनिक वास्तुशास्त्र वैदिक कल में मौजूद पहिया को कुछ हद तक फिर से स्थापित कर रहे हैं।

3.3.1 ईशान एवं पूर्व का भू खण्ड विचार

जिन भूखण्डों में उत्तर एवं पूर्व की तरफ सड़क हो वे भूखण्ड ईशान भूखण्ड कहलाते हैं ऐसे भूखण्डो के विषय में निम्नलिखित निर्देशों का अनुपालन भूखण्ड स्वामी के लिए हितकारी होगा

1. मुख्य प्रवेश उत्तर या पूर्व में ही रखना चाहिए, यह ध्यान रखें कि उत्तरी प्रवेश की अपेक्षा दक्षिणी प्रवेश नीचा न हो। इसी प्रकार पूर्वी प्रवेश की अपेक्षा पश्चिमी प्रवेश भी ऊँचा न हो। कम्पाउंड वाला गेट भी फर्स से ऊँचा न हो। यदि भूखण्ड 10 अंश से अधिक पूर्वी आग्नेय की ओर झुका हो तो मकान का मुख उत्तर में तथा मुख्यद्वार पूर्वी ईशान में रखने के अतिरिक्त पूर्व में एक द्वार भी रखें।

2. मुख्यद्वार पूर्वी या उत्तरी ईशान में सर्वोपयोगी है। ईशान कोण से सीमा दीवार का काम प्रारम्भ करने पर विपरीत प्रभाव होता है। ईशान्य कोण में चढ़ाव होना अशुभ ,धनहानि , वंश हानि पारिवारिक संकट का कारण बनता है। ईशान कोण में यदि पूर्व या उत्तर की सडकों से विस्तार हुआ हो तो ऐसे भूखण्ड में निवास करने वाला अत्यन्त बुद्धिमान, सन्तति वाला, भौतिक एवं त्यागमय जीवन यापन करने वाला होता है।

3. ईशान कोण का विस्तार पूर्व की ओर हो तो निवासी धनी ,प्रसिद्ध तथा न्यायप्रिय होता है। ईशान कोण का विस्तार उत्तर की ओर हो तो धनागम होने के बावजूद उस भवन स्वामी को मार्ग दुर्घटना का भय बना रहता है,

4. यदि पूर्वी ईशान कोण से मार्ग आरम्भ होता है तो निवासी की ख्याति बढती है।यदि उत्तरी ईशान से मार्ग आरम्भ होता है तो सन्ततियों को समृद्धि की प्राप्ति होती है।

5. यदि ईशान कोण कटा हुआ हो तो सन्तान हीनता की स्थिति बनती है, ईशान कोण में पूर्वी या उत्तरी दीवार से लगाकर छोटा कमरा या शैल्टर बनाने पर भी वंश की हानि होती है, ईशान कोण में कमरा हो तो उसमेंपूर्व या उत्तर ईशान में द्वार बनावें, यदि पूर्व में चबूतरा मकान के पर्श से ऊँचा होगा तो पुरुष सदस्य तथा उत्तर का चबूतरा मकान से ऊँचा होने पर स्त्री सदस्यों को पीड़ादायक होता है। इत्यादि बातों का ध्यान देना चाहिए।

पूर्व का भूखण्ड - ऐसे भूखण्ड जिसमें सिर्फ पूर्व दिशा में सड़क हो, वे पूर्व के भूखण्ड कहे जाते है। इसका विशेष प्रभाव पुरुष वंशावली पर होता है तथा निवासी स्वास्थ्य एवं धन दोनों का

का सुख प्राप्त करते हैं ऐसे भूखण्डों में मुख्य कुछ ध्यान देने वाली बातें निम्नलिखित है।

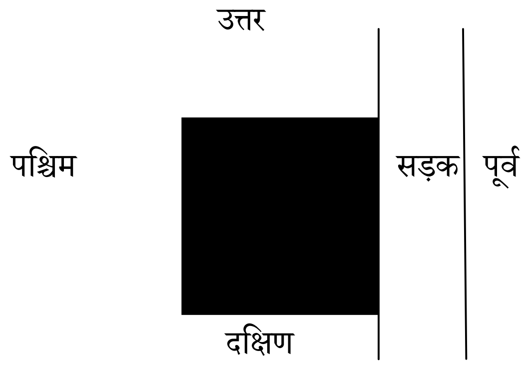

इस भूखण्ड में पूर्व की ओर अधिक रिक्त स्थान है रखा जाय तो निवासियों के लिए बैभव तथा सुयोग्य वंशावली का सुख प्राप्त होता है। यदि उत्तर में रिक्त स्थान न हो किन्तु वास्तु नियमों के अनुकूल निर्माण कार्य किया गया हों तो भी लाभकारक होता है, पूर्व रिक्त भाग में विस्तार स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का कारण बनता है। पश्चिमी एवं दक्षिणी भाग की अपेक्षा पूर्व का भाग नीचा रहने पर निवासियों को धन, वैभव, सुस्वास्थ की प्राप्ति होती है सभी कमरों में एवं बालकनी में भी इसी बात का ध्यान रखा जायतो और भी बेहतर होगा। फर्स से पूर्व का चबूतरा कम ऊँचा होने पर शान्ति ,बैभव, सुख समाधान की प्राप्ति होती है, पूर्व भाग अन्य भागों से ऊँचा होने पर परिवार को दरिद्रता का संकट, पुत्रादि को दीर्घ रोग, मानसिक समस्या का सामना करना पड़ता है। चूँकि पूर्वाभिमुख प्रवेश शुभदायी होता है, ईशान कोण से प्रवेश होने पर वंश की प्राप्ति, शान्ति ,साधन, सुख, वैभव, प्रगति एवं सर्वोपरी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति मिलेगी। यदि पूर्वी सीमा से निर्माण कार्य प्रारम्भ कर पश्चिम में रिक्त स्थान रखेंगे तो हानि तथा पुत्रों का अभाव हो सकता है दुर्घटना भय भी रहेगा, यदि पूर्व के पड़ोसी के कम्पौंड वाल से लगकर मकान बनाते हों तो इनमें 3 इंच छोड़कर 4 फुट ऊँची कम्पौंड वाल बनावें। पूर्वी सीमा से निर्माण कार्य आरम्भ करें तथा पश्चिम में झुका हुआ विस्तार (छतरीनुमा) हो तो निवासी को नेत्र रोग इत्यादि की सम्भावना होती है। यदि पूर्व में झुकाकर विस्तार (छपरीनुमा)बनी हो तो परिवार के पुरुष सदस्यों के लिए लाभप्रद होता है तथा स्लैब वाले मकान में उत्तर एवं पूर्व में दो – दो फुट की बालकनी निकालें, दक्षिण एवं पश्चिम में बालकनी न निकालें, यदि पूर्व कम्पौंड वाल पश्चिम कम्पौंड वाल से नीची रहेगी तो अच्छे पुत्र की प्राप्ति होती है। परन्तु पश्चिम कम्पौंड वाल, पूर्वी कम्पौंड वाल से अगर नीची रहेगी तो सन्तति नाश का भय होगा। यदि मकान का निर्माण इस प्रकार किया गया हो कि उसका कुछ भाग किराये से देना हो तो स्वम् पूर्व अथवा उत्तरी भाग में रहना चाहिए तथा किरायेदार को दक्षिण या पश्चिम भाग में रखना चाहिए मकान जब खाली हो तब दक्षिण या पश्चिम भाग में आ जाए ताकि पूर्व व उत्तर दिशाओं पर ध्यान न रहे ऐसा न करने से वास्तु के मुलभुत सिद्धांतो के विपरीत होने के कारण समस्या आ सकती है।

3.3.2 आग्नेय एवं दक्षिण के भूखण्ड

ऐसे भूखण्ड जिनके पूर्वी एवं दक्षिण पार्श्व में सड़क हो उसे आग्नेय भूखण्ड कहते हैं। ऐसे भूखण्डों में परिवार की महिला सदस्यों तथा द्वितीय सन्तान पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। ऐसे भूखण्डों पर वास्तु का निर्माण पूर्ण सावधानी के साथ करना चाहिए

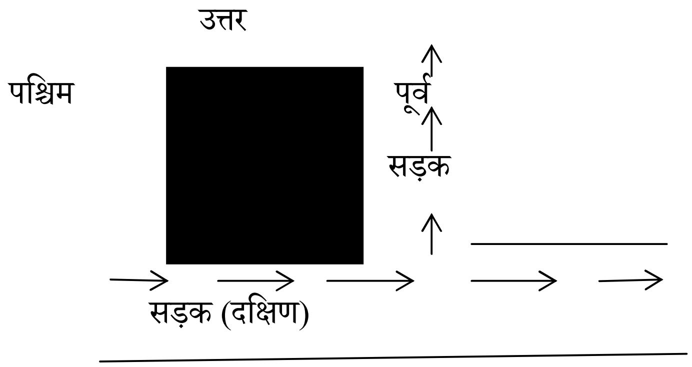

ऐसे भूखण्डों के विषय में निम्लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए यदि दक्षिण का मार्ग नीचा हो तो प्रमुख प्रवेश पूर्व से रखें। यदि भूखण्ड का झुकाव आग्नेय की ओर 10 अंश से ज्यादा हो तो कम्पौन्ड वाल का प्रमुख द्वार पूर्व ईशान में तथा मकान का प्रवेश उत्तर में रखना चाहिए, पूर्व में भी एक दरवाजा रखें। पूर्वी आग्नेय में प्रमुख प्रवेश होने पर भी अशुभ फल ही समझना चाहिए। दक्षिण में प्रवेश हो, पूर्वी तथा पश्चिमी भाग खुले हों, एवं सामने आंगन में आच्छादित चबूतरा हो, चबूतरे के किसी भी तरफ तीन फुट ऊँची दीवाल हों तो आवागमन पूर्ववर्ती अथवा दक्षिणावर्ती रखना चाहिए तथा आग्नेय व पश्चिम में आवागमन अवरोध करें।

यदि दक्षिण भाग में चबूतरा पूर्व ग्रिल से जुड़ा हुआ हो तथा ग्रिल की निचे की दीवार की दीवार घर की अन्य दीवारों से पतली हो तो शुभ है अन्यथा पूर्वी आग्नेय की ओर विस्तार का परिणाम विपरीत मिलेगा। यदि यही ग्रिल पश्चिम में जुड़ी हो तो ठीक है अन्यता इससे पश्चिम नैऋत्य के असर दिखेगा। शौचालय आदि आग्नेय में बनाना अपरिहार्य हो तो भी स्नानागार पूर्व में ही रखें। नारियल आदि के बड़े बृक्ष दक्षिण आग्नेय एवं दक्षिण नैऋत्य के मध्य में लगावें। यदि उद्योग हो तो बायलर, ट्रान्सफार्मर पूर्व कम्पौंड वाल से 3 फिट दूर रखें। यदि उद्योग में आग्नेय कोण में शौचालय बनाना अपरिहार्य हो तो पूर्व कम्पाउंड वाल से 3 फिट दूर बनावें, शौचालय कम्पाउंड वाल से स्पर्श करके न बनावें। यदि भूखण्ड में निर्मित मकान में पूर्व या मध्य आग्नेय बढ़ा हुआ हो तथा कुआं ,गड्ढे आग्नेय में हो एवं उत्तर में रिक्त स्थान नहीं है अथवा दक्षिण में उत्तर की अपेक्षा ज्यादा रिक्त स्थान हो, अथवा नैऋत्य या पूर्व आग्नेय में कम्पाउंड वाल में गेट हो तो इसी स्थिति में भयानक फल प्राप्त होता है, निवासी को मुकदमेवाजी, अग्निभय, चोरी, अनैतिक चरित्र एवं कर्ज का सामना करना पड़ता है। बर्बादी में मकान बिकने की नौबत आ सकती है। तथा पुरुष सन्तति का अभाव होने से सम्पति लावारिश हो जाती है। अगर यदि आग्नेय भूखण्ड में मार्ग का आरम्भ पूर्व या ईशान से हो तो शुभ है, दक्षिण आग्नेय में हो तो भी शुभ होता है

दक्षिण के भूखण्ड – ऐसे भूखण्ड जिनके केवल दक्षिणी पार्श्व में सड़क हो तो उसको दक्षिण भूखण्ड कहते है ऐसे भूखण्ड के दक्षिणाभिमुख होने पर विशेष प्रभाव घर की महिला सदस्यों पर होता है। दक्षिण दिशा को सामान्यत: भारी एवं अशुभ माना जाता है। किन्तु सर्वथा ऐसा नहीं है। यदि वास्तु नियमों का समुचित ध्यान रखा जाय तो शुभ परिणामों की निश्चित प्राप्ति होती है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

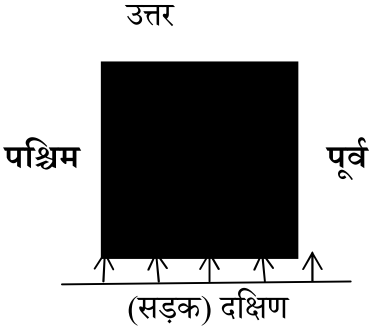

यदि इस भूखण्ड में दक्षिण में उचापन हो तो निवासी को आरोग्य एवं धन की प्राप्ति होती है। भूखण्ड में दक्षिणी भाग में भारी सामान एवं अस्त्रागार रखना अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। यदि दक्षिण कमरों को उत्तरी कमरों से ऊँचा रखा जाय तो वैभव प्रदाता होता है दक्षिण फर्श तल उत्तरी फर्श तल से नीचा होने पर स्त्री रोग, धनहानि, अकाल मृत्यु की आशंका होती है। दक्षिण में चबूतरा उत्तर के चबूतरे से नीचा होने पर धनहानि, रोग का भय होता है। फर्श तल से दक्षिण पार्श्व का चबूतरा ऊँचा होने पर उत्तम स्वास्थ्य तथा सुदृढ़ अर्थ सम्पदा की प्राप्ति होती है।

3.3.3 नैऋत्य एवं पश्चिम के भूखण्ड

ऐसे भूखण्ड जिनके दक्षिण पार्श्व में सड़क हो वे नैऋत्य भूखण्ड कहलाते हैं। चूँकि नैऋत्य दिशा का महत्व वास्तुशास्त्र में ईशान के समकक्ष है ऐसे भूखण्डों पर वास्तु निर्माण का कार्य सावधानी पूर्वक करना चाहिए ऐसे भूखण्डों का प्रभाव परिवार प्रमुख, सहधर्मिणी तथा ज्येष्ठ पुत्र पर विशेष होता है ऐसे भूखण्डों पर नियमानुसार विशिष्ट सावधानियां रखना भूस्वामी को सफल बनाता है अन्यथा आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

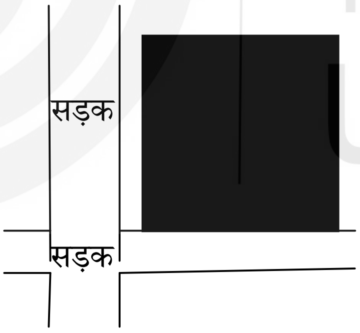

इस दिशा के भूखण्ड को बनाने में निम्नलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए, यदि उत्तर एवं पूर्व से निर्माण कार्य आरम्भ किया जायेगा तथा दक्षिण एवं पश्चिम में उत्तर एवं पूर्व की अपेक्षा अधिक खाली जगह छोड़ने से बहुत सारी समस्या आती है इसलिए इसका ध्यान रखना चाहिए।ऐसे भूखण्ड में नैऋत्य दिशा का निर्माण कार्य तीव्रगति से करवाएं अन्यथा अचानक घटना घटती रहती है। नैऋत्य का कमरा टुटा –फुटा हो तो पहले पूरी सामग्री एकत्र करने के पश्चात ही कार्य आरम्भ करें तथा प्राथमिकता से इसे पूरा करवाएं इसकाल में यात्रा कम करनी चाहिए। निर्माण कार्य दक्षिण या पश्चिम सिरे से प्रारम्भ करना उपयुक्त होगा। दक्षिण एवं पश्चिम में पक्का स्लैब (आर . सी . सी .) बनाना चाहिए ,भले ही उत्तर एवं पूर्व में झुकावदार छपरी बनाया जा सकता है। दक्षिण में उत्तर की अपेक्षा अधिक जगह छोड़कर निर्माण करने पर महिलाओं के लिए अशुभ होता है। पूरी वास्तु के साथ ही प्रत्येक कमरे में भी नैऋत्य कोण समकोण रहना अत्यन्त आवश्यक है। यदि नैऋत्य कोण को कुछ ऊँचा करा दिया जाय तथा नैऋत्य कोण थोड़ा कता भी हो तो ईशान में बढ़ाव का असर मिलने से शुभ फलदायी होगा। नैऋत्य का चबूतरा घर के तल से ऊँचा होने पर घर की

महिलाओं को आर्थिक सुदृढ़ता की प्राप्ति होती है। नैऋत्य में बाहरी कमरा या सेवक गृह बनाना शुभ है। नैऋत्य मेंऊँचे बृक्ष काटना अत्यन्त अशुभ है पत्थरों का ढेर एवं ऊँचे बृक्ष नैऋत्य में रहना शुभ है।

पश्चिम के भूखण्ड – ऐसे भूखण्ड जिनके सिर्फ पश्चिमी पार्श्व में सड़क हो वे भूखण्ड पश्चिम भूखण्ड कहलाते हैं। ऐसे भूखण्डों का विशिष्ट प्रभाव सन्तति अर्थात् पुत्रों पर देखा जाता है ऐसे भूखण्ड के स्वामी को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

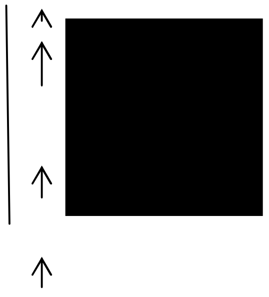

पश्चिम में पूर्व की अपेक्षा अधिक खुला जगह नहीं होना चाहिए।

सड़क पश्चिमी खाली भाग पूर्व की अपेक्षा नीचा नहीं होना चाहिए।

पश्चिम चबूतरा खुला हो तो एक मीटर ऊँची दीवार घर की अन्य दिवारों जितनी ऊँची अवश्य ही बनावें ,ताकि निवासियों का आना- जाना पूर्व एवं पश्चिम की ओर हो, नैऋत्य एवं वायव्य की ओर न हो। पश्चिम का चबूतरा फर्श से ऊँचा होने पर ,यश एवं कृति बढती है। पश्चिम भाग में चबूतरा पूर्व भाग से नीचा होने पर अशुभ है।पश्चिम में घने ऊँचे बृक्ष शुभफल प्रदान करते हैं। बाहरी कमरा या सेवक आवास गृह मुख्य मकान से नीचा होने पर अपयश तथा आर्थिक क्षति होती है। पश्चिमी वायव्य में मार्ग आरम्भ होने पर उत्तर का भूखण्ड कभी न खरीदें। पूर्व का भूखण्ड खरीदना हो तो बीच की दीवार गिरा दें अथवा पूर्वी ईशान में गेट निकालें। यदि पश्चिम में प्रमुख द्वार हो तथा उत्तर में रिक्त भूखण्ड हो तो उत्तरी ईशान में पृथक् गेट लगवाना चाहिए। यदि मध्य की अन्तराल दीवार तोडना हो तो पश्चिम वायव्य में पश्चिम मुखी अलग गेट लगवाए। कम्पाउंड वाल मुख्य प्रवेश से ऊँची या नीची इच्छानुसार रख सकतें हैं। निर्माण कार्य पश्चिम की ओर से आरम्भ करें यह शुभ फलदायी है। एकदम पश्चिम में मुख्यद्वार या दरवाजा शुभ परिणाम देता है। पश्चिम की कम्पाउंड वाल पूर्व की अपेक्षा ऊँची रखना शुभ है।पश्चिम का दरवाजा वायव्य की ओर होने पर अशुभ होता है। पश्चिम के दरवाजे का मुख नैऋत्य में होने पर भी अशुभ कारक ही होता है।

3.3.4 वायव्य एवं उत्तर का भूखण्ड

जिस भूखण्ड में पश्चिम एवं उत्तरी पार्श्व में सड़क होती है उन्हें वायव्य भूखण्ड की संज्ञा दी जाती है। इनका विशेष प्रभाव परिवार की महिला सदस्यों तथा तीसरी सन्तान पर पड़ता है। धनागम का विशेष प्रभाव इस प्रभाग की विशेषता है। इस भूखण्ड में सही वास्तु का निर्माण स्वामी को धनपति बनाता है, गलत निर्माण धनहीन बनाता है ऐसे भूखण्ड का विशेष प्रभाव मित्रता – शत्रुता –सफलता – असफलता मुकदमें की हार – जीत पर पड़ता है इस गृह का निवासी गृह त्यागी, साधु, सन्यासी, दार्शनिक, तपस्वी, तक बन जाता है। ऐसे भूखण्ड वास्तु महत्व की श्रेणी में तीसरा स्थान रखते हैं। ऐसे प्रभाग में वास्तु निर्माण में निम्नलिखित संकेतों को ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि अशुभ प्रभावों से बचत भी हो सके।

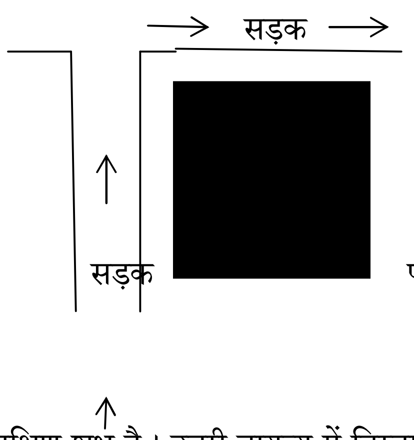

वायव्य में किंचित् विस्तार अच्छा है यदि उसका आधार वर्गाकार या आयताकार हो, नैऋत्य से वायव्य की ओर कोणात्मक विस्तार न हो।

प्राकृतिक रूप से वायव्य कोण कुछ कटा हो तो भी दक्षिण शुभ है। उत्तरी वायव्य में विस्तार होने से अशुभ फल मिलता है।यदि उत्तरी वायव्य में विस्तार हो अथवा वायव्य में कुवां या गड्ढा हो या वायव्य में चढ़ाव हो या बन्द कर दिया गया हो तो तो भी अशुभ फल ही समझना चाहिए। वायव्य में विस्तार या वायव्य में बन्द करने के साथ उत्तरी पार्श्व के सड़क के वायव्य से ईशान की ओर जाने से उत्तरी ईशान में कटाव होगा। इसके प्रभाव से धनागम तो होगा किन्तु स्त्री प्रमुख्यता एवं मानसिक चिन्ता तथा असंतुलन बना रहेगा। इसमें नैऋत्य से वायव्य भाग नीचा रखें, अग्नेय से ईशान भाग नीचा रखें, कम्पाउंड वाल का वायव्य कोना गोल या कोनाकर बना सकते हैं। वायव्य भाग ईशान से ऊँचा किन्तु आग्नेय से नीचा हो तो शुभ है।

उत्तरी भूखण्ड – ऐसे भूखण्ड जिसमें मात्र उत्तर दिशा में ही सड़क होती है उसे उत्तरी भूखण्ड कहते हैं, ऐसे भूखण्डों के विषय में निम्नलिखित विशिष्ट स्मरणीय निर्देशों का अनुपालन स्वामी के लिए हितकारक होगा वास्तुशास्त्र में ऐसे भूखण्ड उत्तम माने जाते हैं। तथा इसका प्रमुख प्रभाव नारी सदस्यों एवं अर्थ व्यवस्था पर प्रत्यक्ष पड़ता है।

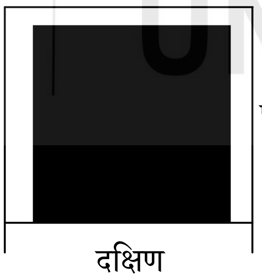

उत्तरी भाग की कम्पाउंड वाल का निर्माण सबसे बाद में करें। उत्तर एवं पूर्व में दो –दो फुट की बालकनी रखें। दक्षिण एवं पश्चिम में खाली जगह न रखें। उत्तर में झुकावदार छपरी रखने से महिलाओं को सुख होता है। यदि निर्माण कार्य उत्तर से प्रारम्भ किया जाए तथा दक्षिण में अधिक रिक्त स्थान हो तो यह अशुभकर होता है तथा मकान छोड़ने की स्थिति आ जाती है।यदि भूखण्ड के पूर्व में रिक्त स्थान के साथ ही अन्य निर्माण वास्तु नियमानुकूल हो तो शुभदायी होता है। उत्तर में दक्षिण के अपेक्षा रिक्त स्थान होने पर सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। यदि उत्तर में खाली भूमि खरीदने से मिलता हो तो अवश्य खरीदकर ले लेना इससे लाभ होता है। उत्तर के तरफ अधिक खाली भूमि सभी प्रकार के विकाश में सहयोगी होता है तथा कई पीढ़ी तक सम्पदा बनी रहती है। उत्तर से प्रवेश प्रमुख द्वार कम्पाउंड वाल से ऊँचा हो तो भी शुभप्रद है। उत्तर में दरवाजा शुभदायी होता है। ईशान में दरवाजा भुद्धिमता, बुद्धिमान

सन्तति तथा प्रगति को देने वाला होता है। वायव्य में दरवाजे होने से चोरभय एवं अग्निभय की सम्भावना रहती है । उत्तर के कमरे का तल, विस्तार के अपेक्षाकृत कम ऊँचा रखना लाभदायक होता है। यदि भूतल एवं चबूतरा, मकान के फर्श तल से निचे हो तो धनागम तथा स्त्री सुख होता है। यदि उत्तरभाग का चबूतरा फर्श तल से ऊँचा हो तो अधिक खर्च, मानसिक कमजोरी एवं कर्जदार भवन स्वामी को बनाता है।

3.4 सारांश

यहां पर बहुत सभी वास्तु के प्रकार का नामोल्लेख किया गया है जिससे की आप विभिन्न वास्तु के प्रकारों से परिचित होकर उसके निर्माण में क्या – क्या सावधानी बरतनी चाहिए इन सभी बातों को समझ सकें। ऐसे भूखण्ड के लिए जिसमें एक या दो ओर सड़क हो, अथवा पूर्व –पश्चिम – उत्तर –दक्षिण में सड़क वाले भूखण्ड को दिशाओं के नाम से उल्लिखित किया गया है। इसमें आधुनिक गृहों के निर्माण के लिए सुझाव भी दिए गये हैं, प्रवेश की अपेक्षा तथा निर्माण कार्य की अपेक्षा क्या सावधानियां रखनी चाहिए, इसका भी सामान्य संकेत करने का प्रयास किया गया है। चूँकि मूल धारणा यह है कि पूर्व पार्श्व की अपेक्षा पश्चिमी पार्श्व अधिक भारी होना चाहिए, भारी का आशय अधिक निर्माण से है। ईशान दिशा में कम से कम निर्माण हो जब कि नैऋत्य दिशा में अधिक निर्माण कर सकते हैं। ईशान का तल नीचा हो जब कि नैऋत्य का ऊँचा, इसी तरह आग्नेय एवं वायव्य का भी तल ईशान से ऊँचा हो, कभी भी ईशान कोण काटा न जाय, इसी तरह प्रत्येक प्रकार के भूखण्ड एवं प्रवेश निर्माण कार्य, सीढी, चबूतरा, कम्पाउंड वाल, खाली भूमि, मार्ग का आरम्भ, दरवाजे, फर्श तल, वाटिका, वृक्ष कूप आदि की अपेक्षा से महत्वपूर्ण संकेत दिए गये हैं। तथा इनके शुभाशुभ परिणाम भी दर्शाया गया है। सामान्यतया दक्षिण एवं नैऋत्य दिशा यम एवं दैत्य से सम्बन्धित समझी जाती है तथा लोग इन्हें सर्वथा अशुभ मानते हैं, किन्तु परिस्थिति वश ऐसा भूखण्ड मकान या दुकान मिल जाता है जिनको त्यागना असम्भव होता है उसके लिए इन संकेतों को ध्यान में रखा जाय तो काफी हद तक दोष निवारण हो जाता है। सही दिशाओं के संतुलित अनुपात में यदि निर्माण किया जाय तो निश्चय ही ये भूखण्ड जिसमें दक्षिण पश्चिम या दोनों ओर सड़क हो, तो ए भी बहुत ही फायदेमंद सावित होगा। मुझे आशा है कि यह पाठ आप लोगों को अच्छे वास्तु के अनुसार गृह निर्माण तथा उसके भेद को जानने में सहयोगी होगा।

3.5 शब्दावली

शाला	=	ओरडे या कमरे को शाला कहते हैं,
घर	=	जिसमें एक या दो कमरे हों उसे घर कहते हैं ,
अलिन्द	=	घर की आगे की दालान को अलिन्द कहते हैं, एवं इसे गड़ भी कहते हैं,
पटशाला	=	जिसमें एक या दो या तीन दालान हो तो पटशाला कहते हैं ,
झरोखा	=	खिड़की,
गुंजारी	=	पटशाला के द्वार के दोनों तरफ खिड़की (झरोखा)युक्त दीवार और मण्डप होता है।इसी में पिछली भाग में तथा दाहिनी और बायीं ओर

		जो अलिन्द हो उसे गुंजारी कहते हैं।
मुषा या जालिय	=	छोटा दरवाजा ,
षडदारू	=	खम्भे का अन्य नाम ,
भारवट	=	स्तम्भ के उपर जो तिरछा मोटा काष्ट रहता है उसे भारवट कहते हैं,
पीठ	=	कड़ी –धरण ये तीनों एकार्थवाची है,
मुख्य घर	=	कमरे से पटशाला तक मुख्य घर होता है, घर में जो रसोई घर आदि भाग हैं वे सब मुख्य घर के आभूषण हैं।

टिप्पणी – जिस घर में एक दिशा में एक ही शाला अर्थात् कमरा हो और अन्य दिशाओं में कोई कमरा न होकर बरामदा मात्र हो, उस घर को एकशाल कहते हैं। जिस घर में दो दिशाओं में दो कमरे हों उस घर को द्विशाल कहते हैं। जिस घर में तीन दिशाओं में तीन कमरे हों, उस घर को त्रिशाल कहते हैं।जिस घर की चारों दिशाओं में चार कमरे हों, उस घर को "चतु:शाल "कहते हैं। इस प्रकार वास्तुशास्त्र में गृह के विविध भेद कहे गये हैं।

3.6 उपयोगी पुस्तकें

1. गृहवास्तुप्रदीप, डॉ. (श्री मती) शैलजा पांडेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
2. वृहद्वास्तुमाला, सम्पादक – डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, डॉ. रवि शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन
3. वस्तुसारसंग्रह, लेखक – आचर्य श्री कमलाकान्त शुक्ल, सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी
4. भवनभास्कर, लेखक – राजेन्द्र कुमार धवन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी संबत 2057, गीता प्रकाशन गोरखपुर
5. वास्तुचिन्तामणि, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बड़जात्या, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैन संस्कृति न्यास, ज्योति निलय गरुड़ खाम्ब चौक इतवारी नागपुर
6. शिल्पदीपक, सम्पादक – डॉ. श्री कृष्ण जुगनु, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी

3.7 बोध प्रश्न

1. वास्तु प्रकार के प्रकार को लिखिए ?
2. एकशाल, द्विशाल आदि गृहों के बारे में लिखिए ?
3. गृह निर्माण आयोजना को बताइये ?
4. पूर्वी भूखण्ड के बारे में लिखिए ?
5. दिशाओं के अनुसार भूखण्डों के नाम लिखिए ?